अध्याय 19

आधुनिक भारत में होने वाले वैचारिक परिवर्तन और समाज सुधार

भारतीय समाज को प्राचीनकाल से ही बहुत उन्नत संस्कृति विरासत में प्राप्त हुई है। यद्यपि इसको बनाए रखने के निरन्तर प्रयास होते रहे हैं, फिर भी कतिपय कारणों से समाज में रूढ़ियों ने स्थान बना लिया और उनमें दोष पैदा हो गये। किन्तु उनके समाधान के लिए भी समाज जाग्रत रहा व समय समय पर उसमें व्याप्त रुढ़ियों को दूर करने के प्रयास भी होते रहे। यथा लगभग 2500 वर्ष पहले गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी ने तात्कालिक समाज में व्याप्त कुरीतियों को मिटाने के लिए प्रयास किये तो बाद में भक्तिकालीन संतो ने मध्य काल में प्रचलित कर्म काण्डों के विरूद्ध समाज में अलख जगाई ।

गतिविधि–

गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी के कार्यों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिये।

उन्नीसवीं सदी में भारत में अंग्रेजों का साम्राज्य स्थापित हो चुका था तथा पाश्चात्य शिक्षा व दर्शन का प्रचार हो रहा था। उस समय के भारतीय समाज में सतीप्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, जाति प्रथा, कन्या वध जैसी कुरीतियाँ प्रचलित थी । अंग्रेजों ने इन कुरीतियों के बहाने सम्पूर्ण भारतीय सभ्यता व संस्कृति की आलोचना प्रारम्भ कर दी। अंग्रेजों ने भारतीय संस्कृति और रीति रिवाजों की अच्छाईयाँ देखने की जगह मात्र बुराइयों को उजागर करने पर जोर दिया । कुछ भारतीय पढ़े लिखे नवयुवक भी इनकी देखा देखी समाज में बुराइयाँ देखने लगे। जिससे भारतीय समाज मे चिंता व्याप्त हो गई।

ऐसे समय में भारतीय प्रबुद्ध वर्ग ने समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न किया। इन लोगों ने प्राचीन वैदिक साहित्य का अध्ययन करके समाज को यह बताया कि उनकी सभ्यता व संस्कृति श्रेष्ठ है तथा जिन कुरीतियों के कारण समाज व धर्म की आलोचना हो रही है, उन कुरीतियों का प्राचीन धर्म व साहित्य में कहीं कोई आधार व अस्तित्व नहीं है। ये कुरीतियाँ कालान्तर में कभी अज्ञानतावश व कभी परिस्थितिवश प्रचलित हो गई थी तथा इन्हें दूर किया जाना आवश्यक था।

इन समाज सुधारकों में से कुछ ने सरकार को प्रेरित किया कि वह कानूनों का निर्माण कर लोगों को इन कुरीतियों का पालन करने से रोके। वहीं कुछ अन्य समाज सुधारकों का मानना था कि लोगों को समझाकर ही इन कुरीतियों को दूर किया जा सकता है। इस तरह आधुनिक भारत में अनेक महापुरूषों ने समाज सुधार के प्रयास किये। इनमें से कुछ महापुरूषों एवं उनके योगदान का अध्ययन हम इस अध्याय में करेंगे।

प्रमुख समाज सुधारक

राजा राममोहन राय

बंगाल में उन्नीसवीं सदी में जो समाज सुधार की लहर उठी उसे 'पुनर्जागरण' का नाम दिया गया। उन्नीसवीं सदी के शुरूआती समय में बंगाल में एक बड़ी भीषण प्रथा का प्रचलन था। बंगाल के लोग इसे सती प्रथा कह कर प्रतिष्ठित करने लगे।

राजा राम मोहन राय

सती प्रथा की चर्चा प्राचीनकाल में भी यदा कदा होती थी। मध्यकाल में इसका प्रचलन कुछ ज्यादा बढ़ गया था। पर उन्नीसवीं सदी के बंगाल में तो इसने एक वीभत्स रूप ले लिया था। कुलीन परिवारों में जोर–जबरदस्ती से, सती के नाम पर, नई विधवा की आहुति दे दी जाती थी। यह बड़ी विकराल परिस्थिति थी, जिसका लोग 'प्रथा' की आड़ में पालन किया करते थे।

गतिविधि–

प्रथा किसे कहते हैं? अपने आसपास के समाज द्वारा पालन की जाने वाली कुछ प्रथाओं की सूची बनाओ। कुछ प्रथाएँ अच्छी भी होती हैं। ऐसी कुछ अच्छी प्रथाओं के नाम बताएँ । कुछ प्रथाएँ बुरी मानी जाती हैं। ऐसी प्रथाएँ कौन–कौन सी हैं ?

इस कुरीति के खिलाफ कलकत्ता के राजा राम मोहन राय ने एक मुहिम छेड़ी। राम मोहन राय का जन्म बंगाल के राधानगर में एक जमींदार ब्राह्मण परिवार में हुआ। इन्होने कई भाषाओं व वैदिक ग्रंथों का अध्ययन किया तथा वैदिक ग्रंथों का साधारण भाषा में अनुवाद किया।

राजाराम मोहन राय ने भारत के धर्म ग्रंथों का विश्लेषण करके यह बताया कि कहीं भी यह नहीं कहा गया है कि स्त्री को अपने पति की मौत पर अपने आप को आग में झोंक देना चाहिए।

राम मोहन राय ने अपनी बातों के आधार पर अंग्रेजी शासन को भी सहमत होने पर बाध्य किया। सन् 1828 में उन्होंने अपने साथियों के साथ मिल कर 'ब्रह्म सभा' का गठन किया। अगले साल इसका नाम बदल कर 'ब्रह्म समाज' रखा गया। ब्रह्म समाज के दबाव में आकर अंत में सरकार ने 1829 ई. में एक कानून बनाया, जिसमें सतीप्रथा का समर्थन करने वाले को सज़ा देने का प्रावधान रखा गया। जो लोग स्त्री को सती करने में मदद करते थे अब उन्हें सख्त सजा दी जाने लगी। बड़ी तेजी से यह कुरीति समाज से खत्म होने लगी।

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

बंगाल के दूसरे महान् समाज सुधारक ईश्वर चन्द्र विद्यासागर थे। गरीब परिवार में जन्मे विद्यासागर ने अपनी योग्यता के बल पर उच्च शिक्षा प्राप्त की। इन्होंने नारी शिक्षा के क्षेत्र में काफी कार्य किया। इन्होंने बालिकाओं की शिक्षा के लिए कई बालिका विद्यालय खुलवाए थे। साथ ही ये विधवा विवाह के प्रबल समर्थक थे। इनके प्रयासों से उस समय विधवा विवाह प्रारम्भ हुए व इन्होंने स्वयं ने अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपने पुत्र का विवाह एक विधवा से करवाया। इनके प्रयासों से 1856 ई. में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम द्वारा विधवा विवाह को मान्यता मिली।

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

ज्योतिबा–फुले

बंगाल के अलावा भारत के अन्य प्रान्तों में भी समाज सुधार के प्रयास हुए। महाराष्ट्र के पुणे शहर में धर्म पर चर्चा करने के लिए 'प्रार्थना समाज' का गठन किया गया। पुणे में ही 'ज्योतिबा फुले' की अगुवाई में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना हुई। ज्योतिबा फुले ने जाति व्यवस्था के विरूद्ध निरन्तर संघर्ष किया तथा 'गुलामगिरी'नामक पुस्तक लिखी।

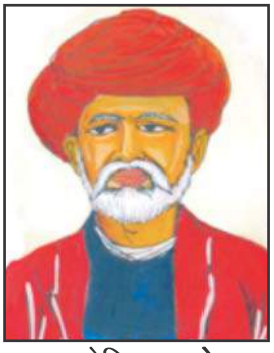

ज्योतिबा–फुले

ज्योतिबा फुले ने लड़कियों को शिक्षित करने के लिए स्कूल खोला। स्कूल में पढ़ाने के लिए कोई योग्य महिला नहीं मिली तो ज्योतिबा ने अपनी पत्नी सावित्री बाई को इसके योग्य बनाया और स्कूल चलाया। विधवा विवाह में भी उनका बहुत योगदान रहा।

तात्कालिक समय में स्त्री शिक्षा की मुश्किलें एवं प्रयास

"स्त्री शिक्षा के बारे में पूर्वाग्रह खत्म होने में बहुत समय लगा। मेरे पिता ने लड़कियों के लिए एक स्कूल शुरू किया था, लेकिन पढ़ाने वाली एक स्त्री थी और कक्षाएँ हमारे घर की चारदिवारी में लगती थी.....मेरी भावी पत्नी के परिवार में हालात बिल्कुल भिन्न थे। मेरी भावी पत्नी की माँ ने चोरी से उसे एक अध्यापिका के पास भेजा था। उसके दादा को जब इस का पता चला, तो उन्होंने धमकी दी कि अगर वह देहरी के बाहर कदम रखने का साहस भी करेगी तो वे उसके पैर काट देंगे.....इस सामाजिक पृष्ठभूमि में यह बात आसानी से समझी जा सकती है कि जालंधर में कन्या महाविद्यालय नामक एक स्त्री शिक्षा की संस्था खुलने से क्या खलबली मची होगी।"

(पत्रकार दुर्गादास की पुस्तक "भारत कर्जन से नेहरू और उनके पश्चात्" (पृष्ठ–31) के प्रसंग से।) इस आधार पर विचार कीजिए कि ईश्वर चन्द्र विद्यासागर व ज्योतिबा फुले को स्त्री शिक्षा हेतु उस समय कितना संघर्ष करना पड़ा होगा।

सैयद अहमद खां

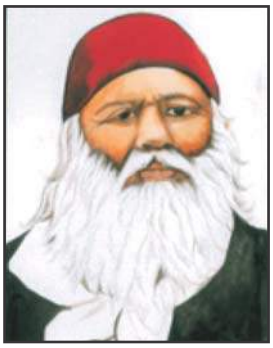
सैयद अहमद खां

सैयद अहमद खां का जन्म दिल्ली में 1817 ई. में हुआ था। अपने पिता की मृत्यु के बाद आर्थिक कठिनाइयों के कारण आजीविका हेतु इन्होंने ईस्ट इंडिया कम्पनी में नौकरी कर ली। मुस्लिम समाज के पिछड़ेपन को देखकर अहमद खां ने अपने समाज को आधुनिक तरीके से शिक्षित करने तथा आगे बढ़ाने की मुहिम चलाई। ये चाहते थे कि मुसलमान अपनी सदियों पुरानी रूढ़िवादिता और मानसिकता को त्याग कर नई शिक्षा प्रणाली के तहत आधुनिक शिक्षा प्राप्त करें। इसी उद्देश्य से पहले उन्होंने दिल्ली में एक स्कूल खोला। फिर 1875 में दिल्ली के पास, अलीगढ़ में 'मोहम्डन एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज' की स्थापना की। यह कॉलेज बाद में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में परिवर्तित हो गया। मुसलमानों को शिक्षा की मुख्यधारा में लाने का श्रेय सैयद अहमद खां को जाता है । सैयद अहमद खां ने प्रारम्भ में कौमी एकता पर बल देते हुए कहा था कि हिन्दु और मुसलमान भारत माँ की दो आँखें हैं। इन्होंने 'साइंटिफिक सोसायटी' की भी स्थापना की। इनका देहान्त 1898 ई. में अलीगढ़ में हुआ।

स्वामी दयानंद सरस्वती

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात में हुआ, इनके बचपन का नाम मूलशंकर था । चौदह वर्ष की आयु में इन्होंने गृह त्याग कर दिया व मथुरा में स्वामी वृजानंद से ज्ञान प्राप्त किया । स्वामी दयानंद सरस्वती ने वेदों को सही तरह से समझने की बात उठायी। उनका और उनके अनुयायियों का मानना था कि यदि वेदों का सार सही तरह से समझ में आ जाए तो हिन्दुस्तान की समस्याओं का हल मिल जाएगा।

दयानन्द सरस्वती कहा करते थे कि–

- सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने के लिए तत्पर रहना चाहिए।
- सबसे प्रेमपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए।
- अविद्या का नाश और विद्या का विकास करना चाहिए।

स्वामी दयानंद सरस्वती

वे विदेशी दासता को अभिशाप मानते थे। उन्होंने ही सर्वप्रथम स्वधर्म, स्वदेश व स्वभाषा शब्दों का प्रयोग किया। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने इन विचारों को आगे बढ़ाने के लिए अनेक यत्न किये। आर्य समाज की महत्वपूर्ण उपलब्धियां स्त्रियों व दलितों को वेद अध्ययन का अधिकार दिलाना, बाल विवाह का विरोध करना तथा शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना आदि था। इनके आर्य गुरुकुल एवं डी.ए.वी. स्कूल आज भी शिक्षा के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। राष्ट्रीय आन्दोलन में भी आर्य समाज के सदस्यों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

स्वामी विवेकानन्द

उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक में बंगाल में विवेकानंद का नाम बहुत जाना जाने लगा। विवेकानंद का जन्म बंगाल के कलकत्ता में 12 जनवरी, 1863 ई. को हुआ। इनके बचपन का नाम नरेन्द्र दत्त था। इन्होंने अंग्रेजी कॉलेज से बी.ए. किया। ये पाश्चात्य बुद्धिवाद से प्रभावित थे, किन्तु इनको आध्यात्मिक शान्ति नहीं मिली। तत्पश्चात् इन्होंने रामकृष्ण परमहंस को गुरू बनाया और उनसे वेदान्त का ज्ञान प्राप्त किया। रामकृष्ण परमहंस ने इन्हें 'विविदिशानन्द' नाम दिया, बाद में राजस्थान के खेतड़ी के महाराजा के कहने पर इन्होंने 'विवेकानन्द' नाम अपना लिया। विवेकानन्द ने अमेरिका के शिकागो शहर में हो रहे सर्व धर्म सम्मेलन में हिस्सा लिया। यह सितम्बर 1893 ई. की बात है। विवेकानन्द ने दुनिया भर के धार्मिक विद्वानों की इस सभा को दो दिनों तक हिंदू धर्म के बारे में बताया। सभी लोग उनकी बातों से बहुत प्रभावित हुए। मूलरूप से विवेकानंद ने हिन्दू धर्म की व्यापकता एवं विशालता का सारी दुनिया को संदेश दिया। विवेकानन्द भारत की गरीबी और दरिद्रता से दुखी थे। उनका मानना था कि दीन–दुखियों की सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा है। विवेकानन्द समाज से गरीबी व छुआछूत को समाप्त करना चाहते थे। इन्होंने कहा था धर्म मनुष्य के भीतर निहित देवत्व का विकास हैं, धर्म न तो पुस्तकों में हैं न धार्मिक सिद्धान्तों में। विवेकानन्द ने अपने संदेश के माध्यम से जनता में राष्ट्रीयता की भावना का निर्माण किया ।

स्वामी विवेकानन्द

रामकृष्ण मिशन का प्रतीक चिह्न

विवेकानन्द ने अपने गुरू के नाम पर रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। रामकृष्ण मिशन आज भी देश भर में समाज की सेवा कर रहा है।

गतिविधि–

रामकृष्ण मिशन के प्रतीक चिह्न का चित्र बनाकर रंग भरिये।

ऐनीबीसेंट

कुछ विदेशी संस्थाओं ने भी भारत की संस्कृति से प्रभावित होकर यहाँ समाज सेवा के कार्य किये हैं। इसमें थियोसोफिकल सोसायटी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । भारत में इस संस्था का विकास श्रीमती ऐनीबीसेंट ने किया। यह आयरिश मूल की महिला थी। उन्होंनें हिन्दु धर्म व संस्कृति का अध्ययन किया व इससे प्रभावित होकर अपने वस्त्र, भोजन व तौर–तरीके सब भारतीय अपना लिये। श्रीमती ऐनीबीसेंट ने हिन्दू तीर्थों की यात्रा की तथा बनारस में रहकर समाज सुधार के कार्य किये।

ऐनीबीसेंट

इन्होंने बनारस में एक सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थापना की जो कालान्तर में 'बनारस विश्वविद्यालय' में बदल गया। ऐनीबीसेंट ने भारत के स्वाधीनता संग्राम में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

(वेलेन्टाइन शिरोल का कथन, श्रीमती ऐनीबीसेंट के बारे में)

जब अतिश्रेष्ठ बौद्धिक शक्तियों तथा अद्‌भुत वाक् शक्ति से सुसज्जित यूरोपीय, भारत जाकर भारतीयों से यह कहें कि उच्चतम ज्ञान की कुंजी यूरोप वालों के पास नहीं बल्कि तुम्हारे पास है तथा तुम्हारे देवता, तुम्हारा दर्शन तथा तुम्हारी नैतिकता की छाया भी यूरोप वाले नहीं छू सकते, तब यदि भारतवासी हमारी (यूरोपीय) सभ्यता से मुँह मोड़ लें तो इसमें आश्चर्य की क्या बात हैं?

राजस्थान में समाज सुधार

राजस्थान में भी उस समय में वैचारिक परिवर्तनों की शुरूआत हुई। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने राजस्थान के करौली, अजमेर, चित्तौडगढ, उदयपुर, जोधपुर आदि स्थानों की यात्रा की तथा विवेकानन्द ने अलवर में प्रवास किया व खेतड़ी महाराजा से उनके अच्छे संबंध थे। इन महापुरूषों के विचारों का प्रभाव राजस्थान में भी पड़ा। स्वयं स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 1883 ई. में उदयपुर में परोपकारिणी सभा की स्थापना कराई। आर्य समाज से प्रभावित होकर यहाँ कई समाज सुधार के कार्य हुए।

गोविन्द गुरु

उन दिनों राजस्थान में भी कई इलाकों में सामाजिक परिवर्तन की बात उठ रही थी। बंजारा परिवार में बाँसियां गाँव (डूंगरपुर) में जन्मे गोविन्द गुरु ने जनजाति वर्ग के लोगों में समाज सुधार किया। वे इस वर्ग को संगठित करना चाहते थे। गोविन्द गुरु ने 1883 ई. में 'सम्प सभा' की स्थापना की। वे अंधविश्वासों को दूर कर उनमें आत्म विश्वास व आत्म निर्भरता को बढ़ावा देना चाहते थे। जनजातियों को शराब पीने से रोकना, चोरी, लूटपाट जैसे कार्यों से दूर रखना एवं विद्यालय खोलने जैसे कार्य उनकी प्राथमिकता में थे।

गोविन्द गुरू

आर्थिक सुधार कार्य के क्षेत्र में उन्होंने स्थानीय वस्तुओं का अधिक प्रयोग व बेगार न करना आदि बातों पर जोर दिया। इन कार्यों से अंग्रेजों और उनके समर्थकों ने गोविन्द गुरू का विरोध शुरू कर दिया। 1913 ई. में अंग्रेजी सेना ने मानगढ़ पहाड़ी पर चल रही सभा पर आक्रमण किया, जिसमें लगभग 1500 व्यक्ति मारे गये। गोविन्द गुरू को गिरफ्तार कर लिया गया।

राजस्थान के अन्य समाज सुधारक व समाज सुधार के प्रयास–

गोविन्द गुरू के अतिरिक्त लसोड़िया गाँव में खराड़ी परिवार में जन्मे सुर्जी भगत (सुरमल दास) ने भी जनजाति वर्ग के लोगों में समाज सुधार किया। गोविन्द गुरू और सुर्जी भगत समाज सुधार के साथ ही साथ आदिवासियों का विकास भी चाहते थे। इसी तरह से राजस्थान में और भी समाज सुधार के लिए यत्न हुए।

विभिन्न शासकों ने अपने राज्यों में प्रचलित कुरीतियों को समाप्त करने के लिए कानून बनाये। जैसे 1822 ई. में बून्दी ने सती प्रथा पर, कोटा ने 1834 ई. में कन्या वध पर, जोधपुर ने 1841 ई. में त्याग प्रथा पर, जयपुर ने 1847 ई. में मानव व्यापार पर, उदयपुर ने 1853 ई. में डाकन प्रथा पर सर्वप्रथम रोक लगाई।

1889 में अजमेर में ''राजपूत हितकारिणी सभा'' बनी, जिसने बहु–विवाह और दहेज प्रथा को नियंत्रित करने की कोशिश की।

इसी प्रकार अजमेर के हरविलास शारदा के प्रयासों से बाल विवाह पर रोक हेतु 1929 ई. में सरकार ने एक्ट बनाया। चांदकरण शारदा व उनकी पत्नी सुखदा देवी ने दलितोद्धार के क्षेत्र में कार्य किए। ऐसे ही प्रयास अलवर में पण्डित हरिनारायण शर्मा ने किए इन्होंने अपने घर के मंदिर के दरवाजे हरिजनों के लिए खोल दिए व जातिगत भेदभाव को समाप्त करने का प्रयास किया। इनके समाज सेवा के कार्यों से प्रभावित हो कर अलवर के महाराजा जयसिंह ने इन्हें अपना सलाहकार नियुक्त किया। राजस्थान के अन्य भागों में ठक्कर बापा, कुँवर मदनसिंह, मामा बालेश्वर दयाल आदि ने समाज सुधार के कार्य किए।

शब्दावली

कुरीतियाँ	–	समाज में व्याप्त बुराइयाँ
कुलीन परिवार	–	उच्च वर्गीय परिवार
अगुवाई	–	नेतृत्व
त्याग प्रथा	–	विवाह एवं शुभ अवसरों पर शासकों द्वारा चारणों को दी जाने वाली राशि

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न एक व दो के सही उत्तर कोष्ठक में लिखे–

1. भारत में थियोसोफिकल सभा का विकास किसने किया ?

(अ) सुर्जी भगत (ब) स्वामी विवेकानंद

(स) सैयद अहमद खाँ (द) ऐनीबीसेन्ट ( )

2. 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना किसने की ?

(अ) ज्योतिबा फुले (ब) स्वामी दयानंद

(स) राजा राममोहन राय (द) गोविन्द गुरु ( )

3. 'ब्रह्म समाज' की स्थापना किसने की ?

4. सर सैयद अहमद खाँ के योगदान के बारे में बताइए ।

5. मानगढ़ हत्याकांड की घटना का संक्षिप्त विवरण दीजिये ।

6. स्वामी विवेकानन्द के जीवन से युवाओं को क्या प्रेरणा लेनी चाहिए ?

7. ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के योगदान को समझाइये ।

8. राजा राममोहन राय एवं स्वामी विवेकानन्द के समाज सुधार के प्रयासों का वर्णन कीजिये ।

9. आर्य समाज के योगदान का वर्णन कीजिये ।

गतिविधि–

1. भारत के प्रमुख समाज सुधारकों के चित्रों का संकलन कीजिये ।
2. भारत के प्रमुख समाज सुधारकों के कार्यों की जानकारी का संकलन कीजिए।
3. आज भी हमारे समाज में कई बुराइयाँ व्याप्त है । कक्षा में इसकी चर्चा करें एवं इसे दूर करने के लिये क्या करना चाहिये ? सुझाव प्राप्त करें ।